झूठ का पहाड़

अंश यादव, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
ग्वालियर, कक्षा 6 बी

पात्र: सुरेश- एक छात्र, मनोज- दूसरा छात्र, प्रिंसिपल सर- कॉलेज के प्रिंसिपल, माली- कॉलेज का माली, दीपक- मनोज का बड़ा भाई, राहल- कॉलेज का अमीर छात्र, सोशल मीडिया वाला- एक व्यक्ति जो सोशल मीडिया पर है, कथावाचक- कहानी कहने वाला

दृश्य 1: कॉलेज का कॉरिडोर

कथावाचक: दो लड़के एक कॉलेज में पढ़ते थे - सुरेश और मनोज। दोनों एक नंबर के झूठे थे। हमेशा झूठ का सहारा लेकर आगे बढ़ते थे। (दोनों कॉरिडोर में बातें कर रहे हैं।)

मनोज *(भागते हुए)*: सुरेश! सुरेश! मेरा बड़ा भाई आया है!

सुरेश: क्या? तेरा बड़ा भाई? अरे, हमें जल्दी प्रिंसिपल ऑफिस चलना होगा!

मनोज: हाँ! अगर प्रिंसिपल सर ने उनके सामने यह कह दिया कि हम हर बात पर झूठ बोलते हैं, तो वह हमारी शिकायत पापा से कर देंगे। *(दोनों तेजी से प्रिंसिपल ऑफिस जाते हैं)*

दृश्य 2: प्रिंसिपल ऑफिस

(सुरेश-मनोज प्रिंसिपल सर के सामने खड़े हैं।)

सुरेश: सर, क्या आप कृपया थोड़ी देर के लिए हमारे साथ ऑफिस से बाहर आ सकते हैं, बहुत जरूरी काम है?

प्रिंसिपल सर: कैसा जरूरी काम?

मनोज *(फुसफुसाते हुए)*: सर, अकेले में आपको कुछ बताना है। यह छात्रों से जुड़ा संवेदनशील मामला है। आप सुनकर खुश होंगे और हमें पुरस्कृत करेंगे। *(प्रिंसिपल सर थोड़ा हिचकिचाते हैं, फिर मान जाते हैं और बाहर चले जाते हैं।)*

कथावाचक: (दोनों ने प्रिंसिपल सर को ऑफिस के बाहर भेज दिया है।)

(सुरेश-मनोज एक माली को अंदर लाते हैं)

सुरेश: माली जी, क्या आप कुछ समय के लिए प्रिंसिपल बन सकते हैं? इसके बदले में हम आपको बीस हजार रुपये देंगे!

माली *(हैरानी से)*: मैं! प्रिंसिपल? पर मुझे तो यह काम नहीं आता!

मनोज: कोई बात नहीं! सुरेश मेज के नीचे से तुम्हें बताता रहेगा कि क्या बोलना है।

माली: बीस हजार रुपये? ठीक है!

(माली प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठ जाता है। सुरेश मेज के नीचे छिप जाता है)

दृश्य 3: प्रिंसिपल ऑफिस

(मनोज बड़े भाई के साथ ऑफिस में आता है)

दीपक: नमस्कार प्रिंसिपल सर। मैं मनोज का बड़ा भाई हूँ।

माली *(सुरेश की आवाज सुनकर, जो मेज के नीचे से आ रही है)*: अ... नमस्कार! बैठिए।

दीपक: मनोज और सुरेश की पढ़ाई कैसी चल रही है प्रिंसिपल साहब?

माली *(सुरेश की आवाज सुनकर)*: वे... वे दोनों बहुत... मेधावी छात्र हैं। और... और... बहुत मेहनती भी। *(सुरेश मेज के नीचे से माली को बताता रहता है।)*

कथावाचक: आधे घंटे तक सब ठीक रहा।

दीपक: बहुत-बहुत धन्यवाद सर। मुझे खुशी है दोनों मन लगाकर पढ़ रहे हैं।

(मनोज का बड़ा भाई चला जाता है)

मनोज *(माली और सुरेश से)*: चला गया! दोनों के बड़े भाई चले गए! अब सोचने वाली बात है, वे बीस हजार रुपये कहाँ से लाएँगे?

दृश्य 4: कॉलेज कैंपस

(सुरेश और मनोज कॉलेज के सबसे अमीर लड़के राहुल के पास जाते हैं।)

सुरेश: भाई, हमें बीस हजार रुपये उधार चाहिए।

राहुल: नहीं, मैं उधार नहीं देता। वैसे भी तुम लोग कॉलेज के सबसे बड़े झूठे हो।

मनोज: प्लीज भाई, बहुत जरूरी है!

राहुल: नहीं।

दृश्य 5: सोशल मीडिया वाले के पास

(दोनों सोशल मीडिया वाले के पास जाते हैं)

सुरेश: भाई, हमें पैसे चाहिए।

सोशल मीडिया वाला: कितने?

मनोज: बीस हजार रुपये।

सुरेश: हम तुम्हें पैसे के बदले अपना पूरा घर दे सकते हैं। *(यह बात वे झूठ कहते हैं।)*

सोशल मीडिया वाला: पूरा घर? ठीक है, देता हूँ। *(सोशल मीडिया वाला पैसे देता है लेकिन उसमें एक रुपया कम होता है।)*

मनोज: इसमें एक रुपया कम है।

सुरेश: कोई बात नहीं, हम तुम्हें एक महीने बाद दे देंगे। *(यह भी झूठा वादा था।)*

सोशल मीडिया वाला: ठीक है।

दृश्य 6: एक महीने बाद - कॉलेज कैंपस

कथावाचक: एक महीना बीता। (मनोज का बड़ा भाई, माली, मनोज और सोशल मीडिया वाला - चारों एक दूसरे को देखते हैं)

दीपक *(माली से)*: आप प्रिंसिपल नहीं हैं ना?

माली *(झिझकते हुए)*: नहीं, मैं तो माली हूँ।

सोशल मीडिया वाला *(मनोज से)*: तुम्हारा घर कहाँ है? तुम तो कह रहे थे घर दोगे?

मनोज *(सुरेश को देखकर)*: ये...

कथावाचक: फिर उन्हें पता चला कि सुरेश और मनोज तो उन्हें झूठ बोले हैं। *(सभी लोग दोनों को गुस्से से देखते हैं। सुरेश और मनोज घबरा जाते हैं)* हम सब जानते हैं कि झूठ बोलना कितना बड़ा पाप है। हम सब इसी झूठ के सहारे एक पहाड़ बनाते हैं, जिसका नाम है झूठ का पहाड़। और जब वह पहाड़ फटता है, तब कितनी बड़ी आपदा आती है, आप सभी को वह पता है। *(परदा गिरता है)*

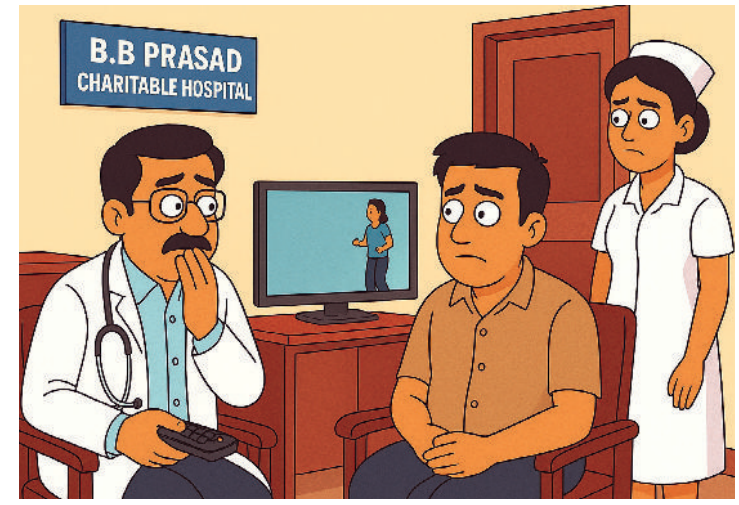

मौन की धमकी

वेदान्त सिद्धार्थ, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
पुष्प विहार, कक्षा 10 बी

पात्र: डॉक्टर बदरी प्रसाद- बंगाली डॉक्टर, विपिन शर्मा- रोगी, मिस ब्रिगेंजा- एक नर्स।

स्थान: प्रसाद बदरी वैरिटेबल हॉस्पिटल

डॉक्टर बदरी प्रसाद अपने कमरे में बैठे टीवी देख रहे हैं- दो दिन में दस किलो वजन घटाएँ। तभी उनका दोस्त विपिन शर्मा दरवाजा खटखटाता है। टक-टक-टक!

डॉक्टर बदरी: *(रिमोट से टीवी मौन करते हुए)* कौन है? अंदर आ जाओ दरवाजा खुला है।

विपिन: (आश्चर्य चकित होकर) अरे बदरी! मैं... तुम्हारे बचपन का लंगोटिया यार विपिन। *(विपिन अंदर आकर डॉक्टर बदरी के सामने वाली कुर्सी खींचकर उस पर बैठ जाता है।)*

डॉक्टर बदरी: (खुशी से लगभग चिल्लाते हुए) अरे विपिन, मेरे जिगरी यार! इतने दिनों बाद दोस्त की याद आई? ये क्या हाल बना रखा है? *(शिकायतभरे अंदाज में)* अबे तूने बिना बताए शादी कर ली! शादी में बुलाया भी नहीं।

विपिन: *(ताली बजाते हुए)* वाह यार! तुम तो बड़े छुपे रुस्तम निकले। तुमने कैसे जाना कि मेरी शादी हो गई है?

डॉक्टर बदरी: क्या हुआ! इतने उदास और दुबले क्यों हो गए हो? कोई तकलीफ है क्या?

विपिन: मेरी बीवी...। अब मैं क्या बताऊ? 'शादी के बाद सब ठीक चल रहा था' *(झिझकते हुए विपिन रुकता है फिर कहता है)* नहीं-नहीं तू मेरा दोस्त है, मैं तुझसे झूठ नहीं बोलूँगा।

डॉक्टर बदरी: क्या बात है साफ-साफ बताओ!

विपिन: वही बता रहा हूँ। दो सप्ताह पहले मेरी पत्नी का जन्मदिन था और मैं उसे जन्मदिन का तोहफा देना भूल गया। तब से उसने मुझे खाना नहीं दिया। सिर्फ पानी पीकर जिन्दा हूँ।

डॉक्टर बदरी: अच्छा! तो ये मसला है। पर मेरे भाई मैं इसमें तेरी क्या मदद करूँ! पत्नी से क्षमा-याचना करो और बात खत्म करो।

विपिन: अरे यार! लाख क्षमा-याचना कर चुका हूँ, वो मानने को तैयार ही नहीं। तुम तो डॉक्टर हो, उसको समझाओ कि वह जो अत्याचार मुझ पर कर रही है उससे मेरी जान जा सकती है। *(विपिन ने गिड़गिड़ाते हुए रुंआसे स्वर में कहा।)*

डॉक्टर बदरी: देख यार! गलती तो तूने कर दी है। पर अब रो मत। मैं तेरी स्थिति समझ सकता हूँ। *(डॉक्टर बदरी मन ही मन खुश हो रहे हैं कि उनकी पत्नी ऐसी नहीं है)*

विपिन: बस तुम जैसे दोस्तों की वजह से हम जैसे लोग जी पा रहे हैं। तुमसे एक विनती है, कल दो बजे... नहीं आज रात को ही तुम मेरे घर आ जाना (विपिन हाथ जोड़ते हुए कहता है।)

डॉक्टर बदरी: अरे मित्र हाथ मत जोड़ो, मैं ठीक सात बजे आ जाऊँगा।

विपिन: शुक्रिया यार! वैसे तुम्हारी पत्नी कैसी है?

डॉक्टर बदरी: अरे... अरे... मैं क्या.... अरे! *(मुँह का हाथ से ढंकते हुए)*

विपिन: ओ हो, 'ये चाँद सा रौशन चेहरे' वाले डॉक्टर साहब...मैं समझ गया। मैं जाता हूँ। *(तभी मिस ब्रिगेंजा कमरे में आती हैं)*

मिस ब्रिगेंजा: महोदय, आपको कष्ट देने के लिए क्षमा चाहती हूँ किन्तु सूचना ही ऐसी है। आपकी जीवनसंगिनी, अर्धांगिनी, पत्नी...

डॉक्टर बदरी: ठीक है-ठीक है। मैं समझ गया। परन्तु वह क्यों आई होंगी? *(सोचते हुए)*

मिस ब्रिगेंजा: महोदय, ऐसा प्रतीत होता है कि आपके गतिशील मन से यह बात फिसल गई कि आज आपकी बीवी का जन्मदिन है।

(डॉक्टर प्रसाद तभी से बेहाश हैं।)

आओ हिन्दी अपनाएँ

आरना, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वसुंधरा सैक्टर 1, कक्षा 8 ई

पात्र:- आठवीं कक्षा के विद्यार्थी एवं अध्यापिका

अध्यापिका कक्षा में प्रवेश करती है।

सभी छात्र एक साथ। *(थोड़े असमंजस में)*: सुप्रभात! गुड मॉर्निंग! नमस्ते!

(कक्षा में कुछ क्षण का सन्नाटा रहता है।)

अमृता *(झिझकते हुए)*: सुप्रभात, अध्यापिका जी।

अध्यापिका *(मुस्कुराकर)*: सुप्रभात अमृता। *(हँसते हुए)* अमृता, तुम तो रोज गुड मॉर्निंग, मैम कहती हो। आज अचानक हिन्दी में अभिवादन करने का झोंका कैसे आ गया?

अमृता *(मुस्कराते हुए)*: अध्यापिका जी, आज हिन्दी दिवस है! आज तो सुप्रभात ही बनता है। *(बगल से विनय फुसफुसाता है)*: और मुझे तो लगा आज छुट्टी होगी! *(थोड़ी हँसी गूंजती है।)*

आकांक्षा *(खड़े होकर)*: अध्यापिका जी, हिन्दी दिवस क्या होता है? और इसे क्यों मनाते हैं?

अध्यापिका: बच्चों, हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। जैसे चीनी भाषा चीन की पहचान है, वैसे ही हिन्दी भारत की आत्मा है। हर देश की अपनी भाषा होती है जिससे उसकी संस्कृति, सभ्यता और पहचान जुड़ी होती है।

आकांक्षा: अध्यापिका जी, कुछ लोग कहते हैं कि दक्षिण भारत में हिन्दी का विरोध करते है? *(पीछे से राहुल कान में बोलता है)*: हाँ, मैंने भी सुना है कि वहाँ लोग *हिन्दी नहीं, तमीज चाहिए* जैसे पोस्टर लेकर घूमते हैं!

अध्यापिका: हाँ बच्चों, भारत विविधताओं का देश है। धर्म, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा- सब कुछ अलग होते हुए भी हम एक हैं। दक्षिण भारतीय चाहते हैं

कि उनकी क्षेत्रीय भाषाओं को भी बराबरी का सम्मान मिले। यह मांग गलत नहीं है। सभी भाषाएँ सम्माननीय हैं। परन्तु हर देश में एक सम्पर्क भाषा होती है जो सभी को जोड़ती है।

(पीछे से मोहित कान में बोलता है): और हमारी भूमिका? टीचर को बर्थडे कार्ड भी अब हिन्दी में बनाना पड़ेगा!

(कक्षा में फिर से हल्की हँसी गूँजती है।)

अध्यापिका: बच्चों, जिस प्रकार अंग्रेजी ने पूरे विश्व में अपने पाँव पसारे हैं, उसी प्रकार हम चाहते हैं कि हिन्दी भी वैश्विक मंच पर सम्मान पाए। इसी उद्देश्य से हम हिन्दी दिवस मनाते हैं। तो चलो संकल्प लें, आज से हम अपनी हिन्दी भाषा को अपनी मुख्य भाषा बनाएँगे और हिन्दी बोलने पर गर्व महसूस करेंगे।

(कक्षा जोर से हँसती है।)

अध्यापिका: मैं चाहती हूँ कि आप सभी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी का भी प्रयोग करें और इसे आगे बढ़ाएँ। *(फिर मुस्कराकर)* वैसे अगर कल से कोई मुझे गुड मॉर्निंग की जगह सुप्रभात कहेगा, तो मुझे लगेगा कि हमारी मेहनत सफल हो रही है। और हाँ, रात में सोते समय गुड नाइट की जगह शुभ रात्रि बोलना।

(बच्चे तालियाँ बजाते हैं)

अध्यापिका: मैं अमृता को धन्यवाद देती हूँ कि उसने इस महत्वपूर्ण दिन की याद दिलाई और हम सब को अपनी भाषा पर गर्व करने का एक अवसर दिया। सभी को हिन्दी दिवस की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सभी विद्यार्थी (हाथ जोड़कर): अध्यापिका जी, आपको भी हमारी हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ।

(अध्यापिका कक्षा से बाहर चली जाती हैं।)

(बच्चे आपस में फुसफुसाते हैं): चलो आज तो अँग्रेजी की जगह हिन्दी में बात करेंगे और इस भाषा को अपनी धरोहर बनाएँगे।